अमृतसर आ गया है - एक विश्लेषण

लेखक - भीष्म - साहनी

"अमृतसर आ गया है" - भीष्म - साहनी द्वारा लिखित एक कहानी है। यह कहानी भारत के विभाजन को आधार बना कर लिखी गई है।

कहानी में यात्रियों का एक समूह पाकिस्तान से भारत के एक सीमावर्ती शहर अमृतसर की ओर यात्रा के दौरान की भयावहता और विनाश का वर्णन है।

विभाजन की घोषणा के उपरान्त भड़की साम्प्रदायिकता की भावना को साकार रूप देने का सफल प्रयास साहनी जी ने इस कहानी के माध्यम से किया है। विभाजन के समय जो चिंगारी लोगों के हृदय में सुलग रही थी, वह दंगों के रूप में सामने आई। कहानी में लेखक ने एक रेलगाड़ी का वर्तमान पाकिस्तान के किसी शहर से निकलकर अलग-अलग स्टेशनों से होते हुए अमृतसर पहुंचने तथा इस रेलयात्रा के दौरान होने वाले तनाव, को छोटी-छोटी घटनाओं के द्वारा दर्शाया है। कुछ पठान यात्रियों द्वारा हिन्दु यात्रियों के उपहास व दुर्व्यवहार को इस कहानी में प्रमुखता से प्रस्तुत किया गया है

इस कहानी के सभी पात्र - चाहे पठान हो या

Scanned with CamScanner

दुबला बाबू हो, या रेलगाड़ी में सफर कर रहे अन्य यात्री, सभी पात्र मध्यवर्गीय तथा घोषित हैं, तथा इस बात से अनभिज्ञ हैं कि पाकिस्तान क्यों बन रहा है?

कहानी का प्रारंभ अमृतसर जा रही ट्रेन में एक पठान यात्री द्वारा एक दुबले पतले बाबू के मज़ाक से होता है। मांस खाने को लेकर उसका उपहास उड़ाया जाता है — "मांस वही खाता, ए बाबू तो जाओ, जनाना डिब्बे में बैठो, इधर क्या करता है" इस प्रकार का उपहास कहीं-न कहीं, उस दुबले बाबू को अंदर ही अंदर व्याकुल कर देता है। जब रेलगाड़ी वज़ीराबाद स्टेशन पर पहुंचती है, तो एक हिन्दू यात्री अपनी पत्नी और बेटी के साथ उस डिब्बे में सवार होता है, परन्तु पठान यात्री उनका विरोध करते हैं, वह हिन्दू यात्री बार-बार उनसे निवेदन करता है कि उसके पास टिकट है, घर में दंगा हो रहा है, वह बड़ी कठिनाई से अपनी पत्नी और बेटी के साथ जान बचा कर स्टेशन पहुंचा है, पर पठान ने आव देखा न ताव, उस मुसाफिर पर लात जमा दी, लात आदमी को न लगकर उसकी पत्नी को लगा जाती है।

धर्म की आड़ लेकर हिन्दू और मुसलमानों में जो विवाद बढ़ रहा था, उसका यह प्रत्यक्ष रूप था

उनके इस व्यवहार से दुःखी होकर वह यात्री, परिवार सहित ट्रेन से उतर जाता है। गाड़ी के इस डिब्बे में साम्प्रदायिक तनाव बहुत अधिक बढ़ जाता है, और दुबला बाबू इसे अधिक महसूस कर पा रहा है। वह भयभीत होकर दो सीटों के मध्य फर्श पर लेट जाता है तो पठान उसे बेइज्जत करके, उसकी मर्दानगी का मज़ाक उड़ाते हैं। यह उपहास भरी बातें माहौल को और तनावग्रस्त कर देती हैं। इसी बीच गाड़ी मुस्लिम ~~बहु~~ बहुल इलाके से निकलकर अमृतसर की ओर बढ़ती है, तो दुबला बाबू शेर की भांति उन पठानों पर दहाड़ता है, उसके मन में भी कहीं-न कहीं एक साम्प्रदायिकता की चिंगारी भड़क उठती है, कि इन पठानों ने किस प्रकार एक हिन्दु परिवार को बेइज्जत करके गाड़ी से उतरने पर विवश किया था। अब वह भयमुक्त महसूस कर रहा है, इसलिए अमृतसर आने के बाद — पठानों को गाली देना, तथा उन पर लोहे की छड़ से प्रहार करके उन्हे लहू-लुहान करना, दुबले बाबू के मन में इतना अधिक द्वेष भरना, यह सब विभाजन से उपजे तनाव का प्रभाव है कि वह दुबला-पतला बाबू मुसलमान की हत्या कर देता है, और अन्त में सकून से बैठ जाता है।

पूरी कहानी साम्प्रदायिक तनाव, डर और दहशत को

दिखाती है

इस कहानी के माध्यम से लेखक ने यह बताने का प्रयास किया है कि साम्प्रदायिक कट्टरता और हिंसा से मानवता का विनाश हो सकता है। एक नारियल सा आदमी, जो मांस नहीं खा सकता, दाल पीकर जीता है, एकाएक साम्प्रदायिक जनून से कैसे हिंसक होकर एक हत्या कर सकता है।

Scanned with CamScanner